आज का पुरुषार्थ 1 Oct 2022

Source: BK Suraj bhai **Website**: www.shivbabas.org

धारणा – *"जरा सोचे जिनके जीवन का बागडोर भगवान के हाथों में है उनका मन कभी भारी हो सकता है? "*

हम भगवान के बच्चे है, सर्वश्रेष्ठ कुल के महान आत्मायें है। भगवान के बच्चे ही यदि **खुश** नहीं रहेंगे तो संसार में भला और कौन खुशी में झूमेगा।

जिन्हें स्वयं भगवान मिलते हो, जिनके लिए **भाग्य-विधाता** श्रेष्ठ भाग्य लेकर आ गया हो, उन्हें तो सदा खुशी में डांस करते रहना चाहिए।

लेकिन मन के **व्यर्थ संकल्प**, मन का भारीपन इस खुशी और आनन्द के अनुभव से दूर रखता है। तो एक बात तो है स्वयं को उलझनों से दूर रखना .. उसमें तो बहुत ज्ञान की शक्ति चाहिए।

लेकिन दूसरी इम्परटैन्ट बात है कि , हम अपने दिनचर्या में रोज सवेरे चार से आठ बजे के समय को इतना सुन्दर व्यतीत करे, भिन्न भिन्न अभ्यासों से गुजारें ..

सवेरे सवेरे मन आनन्द से भरपूर हो जाये। खुशी से मन डांस करने लगे। ऐसी स्थिति यदि हम बनाते है तो सारा दिन मन स्वतः ही उलझनों से मुक्त रहेगा। व्यर्थ से मुक्त रहेगा। श्रेष्ठ विचारों में रहेगा। ईश्वरीय नशें में रहेगा।

तो आज जरा इस ईश्वरीय नशें को जागृत रखें। स्वयं भगवान आया है हमें **स्वर्ग की राजाई देने** के लिए। अपने राजाई को सामने देखें ..

हम जाकर वहाँ **राज्य** करेंगे। सोने की महल बनायेंगे। हीरों की चमक से हमारे महल रात को भी बहुत बहुत चमकते होंगे। अथाह धन-सम्पदा हमारे पास होगी।

खुशी के संकल्प अपने मन में create किया करे। बहुत खुशी की सौगात, खुशी का खजाना हमारे पास है। हम उसे अलमारी में बंद करके न रख दे। उसे खोले और देखे, हम जैसा **खुशनसीब** तो संसार में कोई भी नहीं है।

सवेरे सवेरे जिन्हें ज्ञान अमृत पान करने का श्रेष्ठ भाग्य मिलता है, जिनकी पालना स्वयं वरदाता करते है। जिनकी जीवन नईया का खिवैया वह **सर्वशक्तिमान** वह परम सदगुरू बन गये है।

बहुत हल्के भी हो जाये। अपने जीवन नईया अपने प्राणेश्वर के हाथों में देकर हल्के हो जाये। संकल्प करे ..

" बाबा मेरा जीवन आपके हाथों में .. मेरा परिवार आपके हाथों में .. मेरी जिम्मेदारी मेरे काम धंधे सब आपके हाथों में "

उनके हाथों में सब बागडोर सौंप दे। उन्हें अपने कार्य के पार्टनार बना ले। तो मन सदा हल्का रहेगा। अपने मन को सदा हल्का रखना यह भी महीन बुद्धि की पहचान है।

Divine intellect का लक्षण है हम अपने **बुद्धि को श्रेष्ठ ज्ञान से भरकर**, पवित्रता के बल से भरकर, सूक्ष्म ज्ञान को बुद्धि में धारण करते हुए उसे **सूक्ष्म** और **divine** बनाते चले।

और बहुत हल्के रहते हुए double-light **फ़रिश्ते स्वरुप** की स्थिति के और एक कदम आगे बढ़ाये। भारी होना .. जीवन की यात्रा को कष्टमय बना देता है।

बाबा सामने खड़े होकर कह रहे है →

" बच्चे मन के सारे बोझ मुझे दे दो .. हल्के हो जाओ "

... रोज बाबा के सामने पहुँचे और बाबा की यह आवाज सुने ...

और आज सारा दिन अभ्यास करेंगे →

" मेरे जैसा खुशनसीब कोई नहीं "

.. अपने प्राप्तियों को जरा याद करेंगे चार पाँच बार

और ..

" मैं डबल लाइट फ़रिश्ता हूँ .. बाबा की पवित्र किरणें मुझ पर पड़ रही है "

हर घन्टे में यह दोनों बाते एकबार अवश्य याद करेंगे, अभ्यास में लायेंगे।

।। ओम शान्ति ।।

BK Google: www.bkgoogle.org

Website: www.shivbabas.org